प्रश्न - रसक सामान्य परिचय दैत ओकर भेदक उल्लेख करू।

काव्यशास्त्र मे 'रस' ओहि आनन्द विशेषक बोधक थिक जकर अनुभूति सँ अलौकिक तथा अनिर्वचनीय आनन्द प्राप्त होइछ। एहि आनन्द के 'ब्रह्मानन्द सहोदर' कहल गेल अछि। रसक सम्बन्ध अनुभूति सँ अछि। ई अनुभूति दु प्रकारक होइछ — (1) प्रत्यक्षानुभूति एवं (2) रसानुभूति। मनुष्य अपन व्यक्तिगत सम्बन्धक सँ प्रेम, करुणा, घृणादि भावक जे अनुभूति करैछ ओकरा प्रत्यक्षानुभूति कहल जाइछ तथा काव्य वा नाटकादि के पढ़ला सँ वा देखला सँ जे हृदय मे प्रेम, करुणा, घृणादि भाव जागृत होइछ ओकरा रसानुभूति कहल जाइछ।

काव्य मे रसक सर्वाधिक महत्व देल गेल अछि। बृहदारण्यक उपनिषद मे रसक महत्व प्रतिपादित करैत कहल गेल अछि जे जहिना मानव मात्र आत्माक दर्शन, मनन चिन्तन सँ सभ किछु प्राप्त कए लैछ, ओहि प्रकारेँ काव्य मे रस के सेहो आत्मा कहल गेल अछि। एहि काव्यात्माक ज्ञान मात्र सँ काव्यक सभ तत्वक ज्ञान वा दर्शन भए जाइछ।

रसक परिभाषा दैत भरत मुनि कहलनि अछि - "विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पत्तिः।" अर्थात विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारी भावक संयोग सँ रसक निष्पत्ति होइछ। आचार्य विश्वनाथ सेहो एकरा स्पष्ट करैत कहैत छथि - "विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणा तथा रसतामेति रत्यादिः स्थायी भावः सचेतसाम्।"

रसक उपर्युक्त परिभाषा मे विभाव, अनुभाव, संचारीभाव आदि शब्द आयल अछि। इएह सभ रसक विभिन्न

NOKIA

Scanned with CamScanner

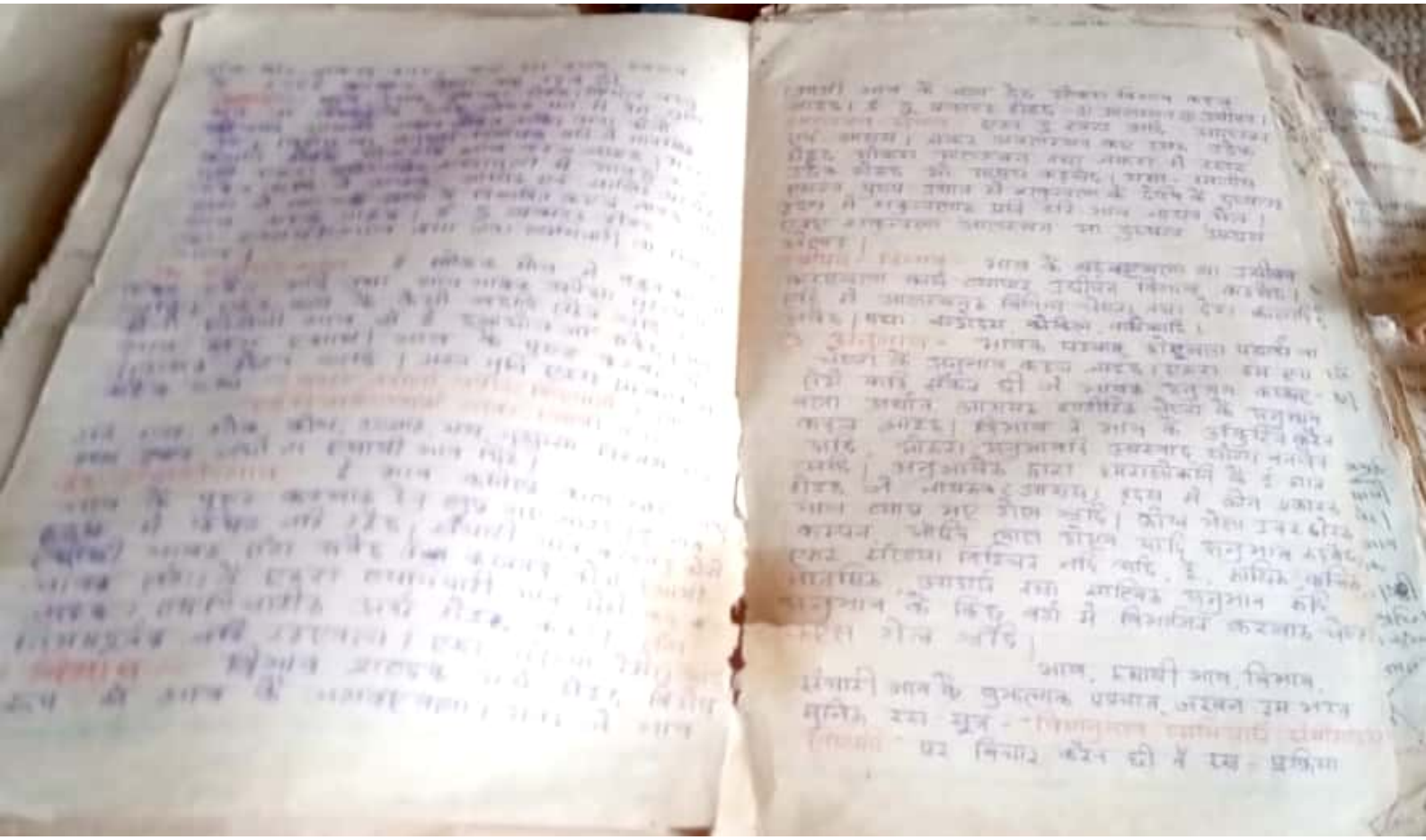

Scanned with CamScanner